17 मई 2017 को राजसमंद में ''भिक्षु निलयम, राजसमंद'' में बालिकाओं/महिलाओं के उत्थान एवं उनके सशक्तिकरण हेतु पंडित दीनदयाल उपाध्याय बालिका उत्थान शिविर के आयोजन'' के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. आज राजस्थान के राजसमंद में बालिकाओं/महिलाओं के उत्थान एवं उनके सशक्तिकरण हेतु निःशुल्क बालिका उत्थान और व्यक्तित्व विकास शिविर के आयोजन के अवसर पर आप सबके बीच आकर मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। यहां राजसमंद में बालिकाओं और महिलाओं के उत्थान व सशक्तिकरण के साथ–साथ उन्हें स्वरोजगार से जोड़ने के लिए बालिका उत्थान एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया जा रहा है। ये निश्चय ही एक बहुत अच्छी पहल है। व्यक्तित्व विकास एक बहुत व्यापक व आवश्यक पहलू है। बालिकाओं व महिलाओं में आत्मविश्वास का दीपक किसी हुनर की बाती से ही जलता है और मुझे खुशी है कि इस शिविर में उनको सिलाई–कढ़ाई, मेहंदी लगाने, ब्यूटी पार्लर, ज्वैलरी मेकिंग, क्ले आर्ट, पेंटिंग जैसे कई कलाओं में प्रशिक्षित किया जाएगा। ऐसे प्रशिक्षण से आप प्रशिक्षणार्थियों को अपने स्किल को विकसित करने का सुअवसर मिलेगा।

2. जब कभी भी राजस्थान का जिक्र आता है तो पराक्रम, वैभव, कला व संस्कृति की एक रील आंखों के सामने चल पड़ती है। यह अद्भुत प्रदेश है। राजा–महाराजाओं की इस धरती में जिजीविषा है, जीवटता है, अदम्य साहस है

और विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष करने की अद्भुत क्षमता है। यहां के लोगों को मुश्किल घड़ी में भी सच और साहस के साथ जीना एवं कठिन परिस्थितियों में भी बहादुरी से संघर्ष करते हुए समस्या का समाधान कर लेना अच्छी तरह आता है। यह प्रदेश सिर्फ क्षेत्रफल में ही सबसे बड़ा नहीं है अपितु यहां के लोगों का मन, उनकी कला, उनकी संस्कृति, उनकी मेहमाननवाजी सब कुछ अद्वितीय है। **'पधारो म्हारे देश'** अब एक राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय शब्द हो गए हैं। जो लोग भारत आते हैं, राजस्थान के सम्मोहन से बच नहीं पाते। वे दोबारा जरूर आते हैं। **यहां का कालबेलिया नृत्य तो विश्वप्रसिद्ध है।**

3. वीरों और वीरांगनाओं की इस पवित्र भूमि राजस्थान की माटी यह संदेश देती है कि आगे बढ़ते रहो, हर परिस्थिति में हुनर से आगे बढ़ो। आगे बढ़ने से मेरा मतलब है समय के साथ चलो। आज टेक्नोलॉजी का समय है और ग्लोबलाइजेशन ने वैश्विक बाजार को बदल कर रख दिया है। चाहे बेहतरीन आर्ट एण्ड क्राफ्ट की मांग हो, नेट से ई–मार्केटिंग की व्यवस्था हो अथवा अपनी कला के प्रचार–प्रसार के आधुनिक तरीके हो, सभी में नयापन आया है। Innovative ideas आए हैं और व्यवसाय को एक नया आयाम मिला है। आज जरूरत है बदलते समय के नब्ज को पकड़ने की और उत्साहपूर्वक, कार्य करने के श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम तरीके सीखने और सिखाने की – यही कला है, कौशल विकास है, उसे सीखना है और उत्कृष्ट से उत्कृष्टतम होना है। मुझे एक श्लोक याद आता है। नीति वचन में कहा गया है किः–

''गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि,
अगच्छन् वैनतेयोडपि पदमेकं न गच्छति।।''

(इसका तात्पर्य है कि चलती हुई चींटी भी चलने से 100 कदम आगे चली जाती है, तेज चलने वाला गरूड़ भी नहीं चलेगा तो वहीं खड़ा रहेगा।)

अर्थात्, समय के साथ कौशल विकास में प्रशिक्षण लेते हुए हमें सीखने की ललक को बरकरार रखना है। अपने हुनर का संरक्षण, सवंर्धन एवं प्रसार भी करते रहना है ताकि उन्नत श्रम संसाधन और कार्यकुशलता का यह क्रम निरंतर चलता रहे।

4. जब विराट संकल्प की उर्वर भूमि से प्रेरणा की एक छोटी–सी कोंपल निकलती है तब बालिकाओं एवं महिलाओं के उत्थान के लिए ऐसे कार्यक्रम के आयोजन की बात मन में आती है। ऐसे शिविर के आयोजन से न केवल बालिकाओं की ओर संपूर्ण समाज की दृष्टि जाती है बल्कि बालिकाओं और महिलाओं, दोनों को पुरुष के बराबर हक देने की बात ऐसे आयोजनों के माध्यम से समाज में प्रसारित होती हैं। बालिकाओं एवं महिलाओं की शिक्षा, उनके उत्थान की दिशा में सम्पूर्ण समाज को आगे आना समय की मांग है। बदलाव एवं प्रगति के नए दौर में हम सभी का कर्त्तव्य है कि उन्हें सर्वोत्तम स्थान दें एवं उनके लिए बेहतर शिक्षा एवं मंच उपलब्ध कराएं।

5. मुझे खुशी है कि जैन सेवा समिति के तत्वावधान में इस शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जैन सेवा समिति द्वारा समाज के विकास एवं राष्ट्र निर्माण की दिशा में कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। मैं माननीय श्रीमती किरण माहेश्वरी जी को भी बधाई देना चाहूंगी कि उन्होंने बालिकाओं एवं महिलाओं को सिलाई–कढ़ाई, मेहंदी लगाने, ब्यूटी पार्लर,

ज्वैलरी मेकिंग, क्ले आर्ट, पेंटिंग जैसी परम्परागत कलाओं में प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से इस कैम्प के आयोजन में अपनी महती भूमिका अदा की है एवं इस शिविर के आयोजन में बढ–चढ़कर हिस्सा लिया है।

6. प्रिय मित्रो! शिक्षा सामाजिक और नैतिक मूल्यों को विकसित करने और नागरिकों को संवेदनशील और जिम्मेदार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारे बहुलवादी और विविधतापूर्ण समाज में हम मूल्य आधारित और समावेशी शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए मूल्यों का समावेश कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति तथा भारतीय जीवनशैली के मूलभूत मूल्यों और आदर्शों का संरक्षण करने वाली शिक्षा ही इसके मूल में है।

7. विद्यार्थियों को भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने हेतु उनका बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक विकास भी आवश्यक है और इस संबंध में शिक्षा संस्थान और अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहां पर उन संभावनाओं का निर्माण किया जाना चाहिए जिनसे बालिकाओं/महिलाओं को उनके होने का एहसास हो एवं उनके अन्दर प्रश्न पूछने और सृजनात्मक वातावरण में अन्वेषण (investigation) की भावना विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु **Innovation** है। **Innovative ideas** शिक्षा पद्धति की दशा और दिशा बदल सकते हैं।

8. राजस्थान के वस्त्र उद्योग में शिल्पीय विविधता और अनुठापन विश्व–प्रसिद्ध हैं। यहां के आभूषण, विशेष रूप से चांदी के गहने, गुणवत्ता वाले ताम्रचीनी के

काम एवं कुन्दन का काम इत्यादि बहुत मन लुभावन है। इनमें हुनर हासिल कर आप अपने को तो आर्थिक रूप से स्वावलम्बी करेंगी ही, इन कलाओं को भी संरक्षित रख पाएंगी। जयपुर में बहुमूल्य रत्नों की कटाई का काम पीढ़ियों से होता आया है। कौशल विकास का यह भी एक पहलू है कि हम अपनी पीढ़ियों से संजोई गई थाती को संरक्षित रखें, उस आर्ट और क्राफ्ट को जीवन्त रखें। राजस्थान की धरती इस मायने में अत्यन्त सौभाग्यशालिनी है। पेंटिंग, मिट्टी के बर्तन, धातु शिल्प के मामले में यह प्रदेश कला और शिल्प की खान हैं और यहां की विरासत अत्यन्त समृद्ध है।

9. हमारे देश की 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम उम्र के युवाओं की है। इसमें आधी से अधिक जनसंख्या महिलाओं एवं बालिकाओं की है। अगर इन्हें प्रशिक्षित किया गया, तो भविष्य में वे अपने परिवार का जीवन स्तर बेहतर तो करेंगी ही साथ ही, राष्ट्रीय विकास एवं अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भागीदार सिद्ध होंगी। सम्पूर्ण विश्व को **skillful work force** उपलब्ध कराने में भारत की भूमिका अहम होगी। एक आकलन के अनुसार, पूरे विश्व को करोड़ों की संख्या में हुनरमंद वर्कफोर्स की जरूरत होगी। भारत की पहचान **Human Resource Capital of the World** के रूप में हो सकती है।

10. आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग में बालिकाओं और महिलाओं को हुनर देकर उन्हीं की ताकत से गरीबी के खिलाफ जंग जीतने का, देश में कौशल विकास मिशन के द्वारा रोजगार सृजन की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने का माननीय प्रधानमंत्री जी का जो स्वप्न है, उसे ऐसे कार्यक्रम गति दे रहे हैं।

11. अब मैं स्वच्छ भारत अभियान की ही बात करती हूं। यह आंदोलन आज जनांदोलन बन गया है। क्यों? क्योंकि इस अभियान में समाज के हरेक वर्ग ने एकजुट होकर अपने लिए एक लक्ष्य निर्धारित किया है। इसमें स्त्री शक्ति का विशेष योगदान रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि स्त्री शक्ति की इच्छाशक्ति से कठिन–से–कठिन काम होते आए हैं और यह क्रम अनवरत जारी भी रहेगा। आप सभी खुद प्रेरित हैं एवं अपने–अपने क्षेत्रों में लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक कर रही हैं, आपका यह प्रयास सराहनीय है। आप हमारे बदलते भारत का आईना हैं। जिस देश में गांव–गांव, शहर–शहर में ऐसी महिला शक्ति हो, उस देश को विश्व का गौरव बनने से भला कौन रोक सकता है?

12. आज महिलाओं के लिए अवसर भी है और सिस्टम में उनके लिए प्रयोजन भी है। सिर्फ आत्मप्रेरणा और आत्मशक्ति से आगे बढ़ने की देर है। बालिकाएं और महिलाएं सरकार की नीतियों में सहयोग भी कर रही हैं और Start Up India, Stand Up India और Skill India जैसी स्कीमों के माध्यम से भारत की एक नई तस्वीर भी उभर रही है। आप लोगों को देखकर मुझे विश्वास हो रहा है कि इस मंजिल पर हम जल्दी पहुंच जाएंगे। मैं अपने हृदय की एक और बात आपसे आज साझा करना चाहूंगी कि मेरा एक सपना है कि वह सुबह कभी तो आएगी जब Gender-Equality हर क्षेत्र में एक स्वीकृत वास्तविकता होगी और आने वाली पीढ़ी में Gender-Equality जैसे विषय पर विचार–विमर्श की आवश्यकता ही नहीं होगी।

13. गांव हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ है। अतः, हमारी सभी नीतियों, कार्यक्रमों का गांव के स्तर पर सफल होना किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिए अपरिहार्य है। इसमें कोई शक नहीं कि पंचायती राज ने महिला सशक्तिकरण को एक नया मुकाम दिया है। समर्पित एवं कर्मठ महिलाओं के नेतृत्व में पंचायतों ने उत्कृष्ट कार्य किया है। महिला प्राधान्य पंचायतों में सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं में सुधार एवं प्राथमिकता देखी गई है। चूंकि महिलाएं परिवार की main executive होती हैं अतः, वे जानती हैं कि किस काम की कितनी priority है। किसी ने कहा है और मैं उद्धृत करती हूं कि **"If you want something said, ask a man; if you want something done, ask a woman."**

14. Training programme का यह शिविर आपको दिशा देने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका अधिक से अधिक लाभ लें, अपने हुनर को निखारे, आगे बढ़े, अपने लिए परिवार व समाज के लिए आप उपहार बने। मैं मानती हूं कि हर बेटी एक उपहार है। उनकी रक्षा करना एवं उनकी प्रतिभा को निखारने का काम करते हुए समाज में सकारात्मक बदलाव लाना ही हम सबका धर्म है।

15. मैं सभी माताओं, बहनों, बेटियों का आह्वान करती हूं कि आइए, आगे बढ़े, पढ़े–पढ़ाएं, हुनर को सीखें–सिखाएं, एक सुन्दर, प्रगतिशील और सशक्त भारत बनाएं।

जय हिन्द।

————